उसकी खुशबू

सुधा ओम ढींगरा

सुमित अमेरिकन लड़की जूली की परियों जैसी सुंदरता पर इस कदर मोहित हो गया कि उसकी कल्पना अपनी पत्नी के रूप में करने लगा। लेकिन उसका प्यार इत्र की खुशबू की तरह कैसे उड़ गया?

लॉबी के कोने में पड़े कॉफी पॉट से हर 2 घंटे बाद कॉफी लेने जाना और उससे बतियाना उसे बहुत अच्छा लगता। अमेरिकंस का उपहास उड़ाता हुआ वह अकसर कहता कि गोरा रंग इनके भद्दे नैननक्श छुपा जाता है। पता नहीं लोग गोरी लड़कियों पर क्यों मरते हैं, असली सुंदरता तो सांवले रंग में है, पर उससे मिलने के बाद वह रंग और सुंदरता पर अपनी प्रतिक्रिया देने से बचता और चुप्पी साध जाता। एक प्रोजेक्ट पर काम करने वह बंगलौर से यहां आया है और 2 संस्कृतियों के टकराव में उलझ कर मानसिक शांति खो चुका है।

हालांकि भारत में वह स्वयं को पश्चिमी संस्कृति और आधुनिक सभ्यता का अग्रणी समझता था। उसने महसूस किया कि यहां की अच्छी बातें भारत की अपनायी हुई संस्कृति से गायब थीं। यथार्थ और ओढ़े हुए यथार्थ का बखूबी अंतर समझ कर वह सिटपिटा गया। इसी अंतर्द्वंद्व में उलझा हुआ वह उसे मिला था।

पहली बार उससे हाथ मिलाते समय उसकी आंखें चुंधिया गयी थीं। एक-एक अंग, नक्श तराशा हुआ। सुनहरे बाल, भूरी आंखें। उससे आ रही कलियों के इत्र की तीखी खुशबू उसे मदहोश कर गयी थी, जब मृदु स्वर में उसने कहा, "आई एम जूली।" उसे लगा, बचपन में सुनी परीकथाओं में से निकल कर सामने आ खड़ी हुई किसी परी से हाथ मिला रहा हो। वह उसी मंजिल पर ग्राहक सहायतार्थ विभाग में रात की शिफ्ट में काम करती थी, जहां वह एक विभाग में रात के प्रोजेक्ट को देखने भारत से यहां आया था। ज्यों ही वह कॉफी लेने लॉबी में जाता, सफेद कपड़ों में सुसज्जित जूली उससे पहले ही वहां खड़ी होती। रात की चुप्पी की गोद, जूली का साथ उसे कल्पना लोक में झूला झुलाता सा लगता। वे दोनों वहीं सोफे पर बैठ कर कॉफी की चुस्कियां लेते। वह बोलता, जूली बस उसे सुनती और मुस्कराती रहती। वह ऐसी पत्नी ही तो चाहता है, जो उसके हर दुख-दर्द को सुने, समझे और मुस्करा कर उसे ऊर्जा दे।

परिकल्पनाओं से निकल कर उसने पूछ ही लिया कि वह हर समय सफेद कपड़े क्यों पहनती है? जूली कुछ नहीं बोली थी, बस आंखों के समंदर में एक लहर उठी थी और वह उसकी आंखों में देर तक देख नहीं पाया। उस लहर ने उसका मन भिगो दिया। वह उससे कहना चाहता था कि उसके सफेद कैनवस को वह रंगों से भर देगा, पर जूली की खामोशी कब्रिस्तान के सन्नाटे सी उनके मध्य पसर गयी और उस सन्नाटे को तोड़ने की वह हिम्मत नहीं जुटा पाया।

जूली उसके भीतर चल रहे संस्कृतियों के टकराव से पैदा हुए अंतर्द्वंद्व पर छा गयी। अब वह उसी के बारे में सोचता रहता। जूली के जीवन में कोई दुर्घटना हुई है यह वह समझ गया था। वह उसे कुछ भी बताने को तैयार नहीं थी। वह कंपनी में नया था, अपने सहकर्मियों से जूली के बारे में पूछने से कतराता था। कंपनी में अफवाहें जंगल में आग की तरह फैलती हैं।

कई दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा। जूली उसके लिए रहस्यमयी पहेली बनती जा रही थी। वह उसके साथ रात्रि भोज पर जाती। मुस्कराते हुए बहुत से विषयों पर बातें करती, पर अपने बारे में किए गए उसके हर प्रश्न को टाल जाती। वह उसके मोहपाश में बंधा उसकी भूरी आंखों में झांकता कुछ भी ढूंढ़ ना पाता सिवाय शून्य और मौन की ठंडी धुंध के।

उसके बारे में जानने की तीव्र जिज्ञासा उसे बेचैन कर गयी। उसे लगने लगा कि वह अवसाद में जा रहा है। जिसे बेइंतिहा चाहता है, वह उसे समुद्र के दूसरे छोर पर खड़ी नजर आती और उसकी किश्ती भंवर में उलझ कर डूबती महसूस होती। कंपनी की डाइरेक्टरी में काम की जानकारी के अतिरिक्त व्यक्तिगत जानकारी निजता के अंतर्गत सुरक्षित थी। गूगल सर्च में भी वह उसके बारे में वही जान पाया, जो कंपनी की डाइरेक्टरी में था।

उसके भीतर जूली को ले कर हर समय हलचल मची रहती। शायद यही प्यार है। अगर यही प्यार है, तो उसका मन इतना अस्थिर क्यों है? वह उस लड़की को क्यों इतना चाहता है, जो उससे दूरी बनाए हुए है। कभी सोचता कहीं वह उसे सिर्फ दोस्त ही तो नहीं समझती। पर जूली की शारीरिक भाषा उसे कुछ और कहती। जूली का आकर्षण उसे तड़पाता। पहली बार उसे महसूस हुआ कि प्रेम अभिव्यक्ति चाहता है। उसे अभिव्यक्त ना कर पाना कितना पीड़ादायक है। उस पीड़ा की कसक रह-रह कर उठती।

समय ने उसके दर्द को पहचान लिया और उसे मौका दिया। उस दिन जूली का काम जल्दी समाप्त हो गया और उसने उसे घर छोड़ने का आग्रह किया। वह सहर्ष तैयार हो गया। अकेले में अपने मन की बात कहने, उसके बारे में और जानने की उत्सुकता वह अपनी मुस्कराहट में छिपा गया।

बाहर हल्की-हल्की बूंदाबांदी हो रही थी। लगातार हो रही बारिश ने चारों ओर उदासी का कोहरा जमा दिया था। वातावरण में घुटन थी, अलसुबह अभी रात ही लग रही थी।

"मेरा घर आपके रास्ते में है," जूली के कहने पर उसने कार हाईवे 85 पर मोड़ ली। लता की स्वर लहर उभरी, *आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे...* उसने कार का सीडी प्लेअर बंद करने के लिए हाथ बढ़ाया। जूली ने रोक दिया, "ये लता मंगेशकर हैं। मुझे इनके गाने बहुत अच्छे लगते हैं।"

वह उसके मुंह से हिंदी सुन कर हैरान रह गया।

"हैरान मत हों, भारतीय कल्चर समझने के लिए ही मैंने हिंदी सीखी।"

यह सुन कर वह भीतर ही भीतर विभोर हो उठा और उसके मां-बाबू जी के खुशी से प्रफुल्लित चेहरे उसकी आंखों के सामने घूमने लगे।

"मैं तुम्हें परिवार से मिलवाना चाहता हूं।"

"सुमित सक्सेना कल की मत सोचो, इस पल को एंजॉय करो। मैंने पलों में जीवन की धारा उलटी बहती देखी है। क्या से क्या हो जाता है? समय ने मेरे साथ कई खेल खेले हैं। अब मैं समय के साथ खेल रही हूं।"

"तुम क्या कह रही हो, मैं कुछ समझा नहीं।"

फोटो : दिलीप बैनर्जी

जूली के चेहरे पर विकृत सी मुस्कराहट आयी। सुमित की आंखें विंडशील्ड से बाहर सड़क पर टपकती वर्षा की बूंदों को देख रही थीं और कार की हेडलाइट्स में अंधेरी सड़क पर रास्ता तलाश रही थी। वह उसकी विकृत मुस्कराहट देख नहीं पाया।

''वह भारतीय था,'' सुमित स्टीयरिंग वील को संभाले, सड़क पर आंखें टिकाए बोला।

''हां, सांवला, लंबा, ऊंचा तुम्हारी तरह।''

''धोखा दे गया?''

जूली सिर झुकाए खामोश रही।

लगातार बारिश ने सड़क पर फिसलन पैदा कर दी थी। दो-तीन बार कार फिसली। सुमित ने कार संभाल ली। वह अपने घर की तरफ जानेवाले मोड़वाली सड़क पर आ गया।

''हां यहीं, बायीं तरफ चर्च के सामने रोक दो, मैं यहीं रहती हूं और यहां के पादरी की बेटी हूं।''

''यहां से तो मैं रोज निकलता हूं,'' सुमित ने कहा।

''मुझे मालूम है,'' उसने लापरवाही से कहा और सुमित को कार से बाहर निकलने का इशारा किया।

रिमझिम बारिश जूली को भिगो रही थी और वह भीगने लगा, तो जूली ने उसे कस कर आलिंगनबद्ध किया और उसके चेहरे पर ताबड़तोड़ चुंबन दाग दिए। फिर वह उसे बिना देखे चर्च की ओर बढ़ गयी।

सुमित जूली के इस आकस्मिक व्यवहार से स्वयं को संभालता कार में आ बैठा। संवेगों से भीगा और इत्र की खुशबू से लिपटा उसका बदन सरूर में आ गया। अपने घर की तरफ जानेवाले मोड़ की ओर बढ़ते हुए उसे चक्कर आने लगे। इससे पहले कि वह कार सड़क के किनारे की ओर ले जाता, जोर का एक झटका उसे लगा और उसकी आंखें अस्पताल के कमरे में खुलीं।

''सुमित, तुम बहुत खुशकिस्मत हो, जो इस भयंकर दुर्घटना में बच गए,'' डॉ. शाह ने बड़े प्यार से कहा।

''चार भारतीय नौजवानों की मौतें मैं इसी मोड़ पर देख चुका हूं, जहां तुम्हारा एक्सीडेंट हुआ। इसीलिए इसे 'खतरनाक मोड़' कहते हैं।''

उसकी आंखों के सामने वह एग्जिट घूम गया, जिस पर फूलों के गुच्छे पड़े होते हैं। पहली बार उन

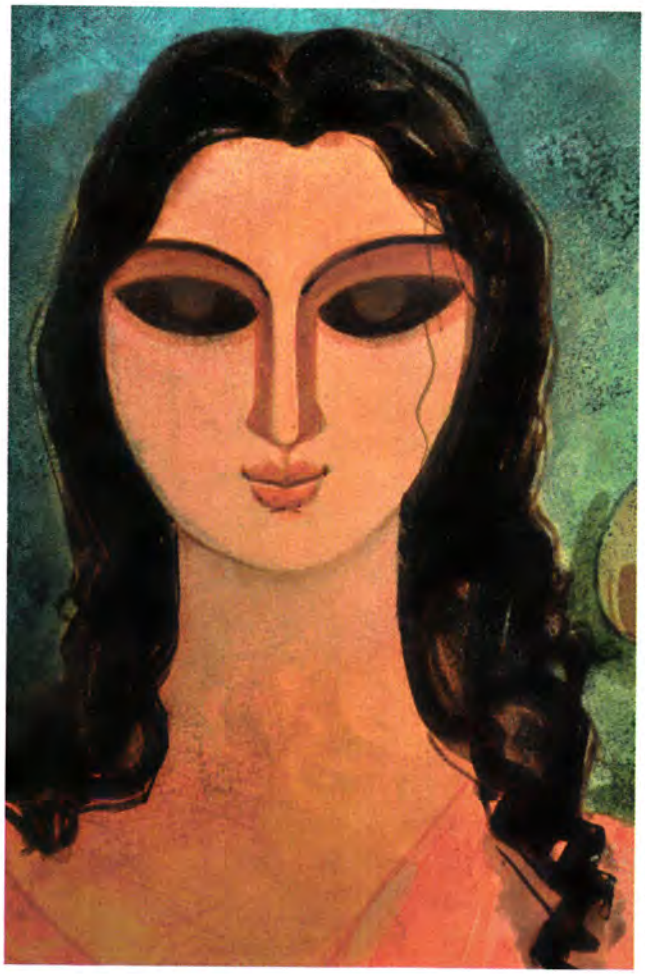

''कार दुर्घटना में हमें कोई सबूत नहीं मिला। मिस्टर सुमित, यह कोई संयोग नहीं कि जूली के हर बॉयफ्रेंड की मौत एक ही तरह से, एक ही स्थान पर हो।''

गुच्छों को देख कर उसने अपने एक सहयोगी कमल से पूछा था कि इस देश में सड़कों के कोनों या किनारों पर फूलों के गुच्छे क्यों पड़े होते हैं? कमल ने उसे बताया था कि जब यहां कोई व्यक्ति सड़क दुर्घटना में मारा जाता है, तो उसके घरवाले प्रार्थना करके फूल वहां रख जाते हैं।

''पर वे फूल तो हमेशा ताजा दिखते हैं,'' उसने हैरान होते हुए कहा था, ''इसका मतलब है कि अभी किसी की दुर्घटना हुई है या लोग रोज ताजे फूल रख कर जाते हैं।''

''सुमित, कई लोग आर्टिफिशल फूल वहां जमीन में गाड़ जाते हैं। दूर से वे ताजे नजर आते हैं और लंबे समय तक उस स्थान पर लगे रहते हैं, जहां परिवार के किसी प्रिय ने दम तोड़ा होता है। त्योहारों के दिनों में कई बार इन्हीं फूलों के साथ मोमबत्तियां जलती भी तुम देखोगे। यह यहां के परिवारों का अपने प्रियजन का सड़क दुर्घटना में मारे जाने पर श्रद्धांजलि देने का तरीका होता है,'' कमल ने बड़े विस्तार से उसे समझाया था।

तभी पुलिसवाले ने जूली की तसवीर दिखाते हुए पूछा, ''इस लड़की को पहचानते हैं। आठ साल पहले इसकी शादी मनोज देशमुख नाम के लड़के से उसी चर्च में होनेवाली थी, जिसके एग्जिट पर आपकी कार वृक्ष से टकरायी थी। शायद आप पहले से ही ब्रेक लगाने की कोशिश कर रहे थे, इसलिए बच गए। शादीवाले दिन मंडप में मनोज ने जूली से शादी करने से इंकार कर दिया। उसके कुछ दिनों बाद पहली मौत मनोज की हुई और उसके बाद 4 लंबे, सांवले, हृष्ट-पुष्ट भारतीय लड़के उसी एग्जिट पर दुर्घटना के शिकार हुए।''

डर की सिहरन उसके शरीर में दौड़ गयी। उसे खुद की आवाज कुएं से आती महसूस हुई, ''वह वहां के पादरी की बेटी है।''

''झूठ कहा उसने। वहां के पादरी की कोई बेटी नहीं,'' पुलिसवाले ने तपाक से कहा, ''जो लड़के कार दुर्घटना में मारे गए, सिवाय उनकी टूटी कारों के पुर्जों के हमें कोई और सबूत नहीं मिला। खून और ऑटोप्सी की रिपोर्ट में भी कुछ नहीं निकला कि शक की सुई जूली की तरफ जाती। मिस्टर सुमित, यह कोई संयोग नहीं कि जूली के हर बॉयफ्रेंड की मौत एक ही तरह से, एक ही स्थान पर हो।''

''आपको कैसे पता कि हरेक मरनेवाले की गर्लफ्रेंड जूली थी।''

''मिस्टर सक्सेना, सबके फोन में जूली की तसवीर मिली। यहां तक कि आपके फोन में भी,'' पुलिसवाला उसकी तरफ देखते हुए गंभीर स्वर में बोला, ''वह अपने अपमान का प्रतिशोध सांवले, लंबे, पुष्ट भारतीय लड़कों से ले रही है। आप बच गए हैं, तो जरा खुल कर एक्सीडेंट से पहले की सब बातें विस्तार से बताएं, ताकि हमें जूली के खिलाफ कोई सूत्र मिल सके।''

उसे पुलिसवाले की आवाज कहीं से आती प्रतीत होने लगी... और अपने बदन से उसे इत्र की तीखी खुशबू आने लगी...